Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

# PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

*Dr Hemant Kumar Singh*

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

*Herambh Welfare Society*

Varanasi (India)

# भारतीय लोक प्रशासन में सत्य निष्ठा

डॉ० अंजुलता मिश्र - डॉ कमलेश नारायण मिश्र[1]

अन्य सभी सामाजिक कार्यों की भाँति लोक प्रशासन के लिये भी यह आवश्यक है कि वह कुछ प्रमुख नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित हो। जैसे न्याय, समानता, निष्पक्षता आदि मूल्यों को साक्षात्कृत करना होता है। यदि प्रशासन का उद्देश्य केवल शांति और व्यवस्था, कार्य कुशलता अधिकाधिक उत्पादन, शालि में व्यापक साझेदारी, कम से कम व्यय और अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने तक ही सीमित मान लिया जाय तो लोक प्रशासन की अपेक्षाकृत स्थायी व्यवस्था का निर्माण करना असंभव होगा। ये औपचारिक उद्देश्य[2] अत्येत आवश्यक है किन्तु इनके साथ अधिक तात्विक उद्देश्य है किन्तु इनके साथ अधिक तात्विक उद्देश्य भी संयुक्त होने चाहिये, जैसे सार्वजनिक कल्याण की प्राप्ति, सामाजिक सामंजसय मनुष्य के नैतिक चारित्र का विकास तथा सामान्य प्रगति और उन्नति को साक्षात्कृत करना। लोक सेवा के क्षेत्र में सत्य निष्ठा का व्यापक अर्थ है।[3] हमें उसे नैतिक तथा संस्थागत दोनों ही अर्थों में समझना है। लोक प्रशासन का काग्र क्षेत्र सामाजिक होता है।[4] इसलिये ऐसा कोई काम राज्य की आवश्यकता'' के नाम पर कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता जिससे मनुष्य की मनुष्यता का अपकर्ष होता है। अत्यधिक संकट की परिस्थितियाँ अवश्य अपवाद मानी जा सकती है। यदि राज्य के अस्तित्व के लिये ही खतरा हो तो ऐसे आचरण को उचित माना जा सकता है जिसका मानवीय आचारनीति के आधार पर समर्थन नहीं किया जा सकता हो। अतः सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में भी उन नैतिकगुणों की आवश्यकता होती है जो पूर्णता के लिये आवश्यक होते हैं।

लगभग एक हजार वर्ष की विभिन्न प्रकार की पराधीनता तथा निराशाओं के बाद भारत स्वतंत्र हुआ। लोकतंत्र तथा सामाजवाद के आदर्शों का जनता के लिये तब तक कोई अर्थ न हीं हो सकता जब तक कि सामाजिक तथा राजनीतिक नेता जनता की अपनी अधिकतम योग्यता के अनुसार सेवा नहीं करते। यह आवश्यक है कि ाारत की लोक प्रशासन व्यवस्था देश की नैतिक तथा आहयात्मिक परम्पराओं पर आधारित हो।[5] नैतिक गुणों तथा मूल्यों का पुनरूत्थान करना उनपरिहार्य है। हर लोकनाना चाहिये और अपने कर्त्तव्यों का पालन करते समय उनके प्रति निष्ठावान रहना चाहिये।

लोक सेवाओं के नैतिक आधार पर बल दिया जाना चाहिये। ईमानदारी। निष्पक्षता, परिस्थितयों को समझने, प्रभावकारी निर्णय करने की योग्यता और

---

[1] एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्ययक्ष, म0मो0मा0 पी0जी0 कालेज, भाटपार रानी देवरिया

न्याय की भावना आदि गुण अत्यन्त आवश्यक है। ब्रिटिश प्रशासन का तात्विक सिद्धान्त यह है कि अधिकारियों को ईमानदारी ही नही होने चाहिये बल्कि यह भी आवश्यक है कि वह मानी के संदेह से भी परे हो। यानि कहने का तात्पर्य यह है कि बाहरी आचरण ऐसा होना चाहिये कि जिसका ईमानदारी तथा सदाचार के नियमों के साथ पूर्ण सांमजस्य हो। आज हमें प्रशासनकीय क्षेत्र में एक विचित्र बात देखने को मिलती है। प्रशासकीय अधिकारियों तथा लोक सेवकों के रूप में लोगों का आचरण बहुत ही कुंटिक होता है। नैतिक नागरिकों के रूप में उनका आचरण जैसा होना चाहिये वैसा नहीं होता। आचरण का[6] यह दूसरा माप समाप्त होना चाहिये। आधारभूत उद्देश्य सद्जीवन है। सदजीवन के लिये समाज अत्यधिक बु0 संशत बनाने के लिये महत्वपूर्ण साधान प्रदान करता है।[7] अतः किसी प्रशासकीय व्यवस्था की यही आधारभूत आचार नीति हो सकती है ि कवह जीवन को सार्थक बनाने वाले आदर्शों के अधिकाधिक निकट हो। यदि नैतिकता के दूहरे माप दण्ड स्वीकार किया गया है तो सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी ईमानदारी, न्याय सम्यता आदि उन्हीं आदर्शों को अपनाना पडेगा। जिन्हें हम पारिवारिक जीवन में तथा व्यक्तियों के रूप मं साक्षात्कृत करना चाहते हैं। यदि हम परिवार में सम्यता तथा शिष्टता चाहते हें तो हमें सामाजिक क्षेत्र में भी इन्हीं गुणों को व्यवहारिक रूप देना होगा। जिन गुणों की हम एक सत्य पुरूष से आशा करते हैं उनको हमें सार्वभौम और सर्वव्यापी बनाना है जिससे वे कल्याणकारी लोक प्रशासन का आधार बनाया जा सकें।[8]

कौटिल्य एक ऐसे प्रचीनतम राजनीतिक वैज्ञानिक थे जिन्होंने प्रशासनकीय प्राचारनीति के उस आदर्श को महत्व दिया।[9] कौटिल्य का नीतिवाक्य था कि लोक सेवक का जीवन शौचयुक्त होना चाहिये और उसे ऐसे सभी प्रालोमनों से बचना चाहिये जो अशौच की ओर प्रवृत्त करते हों। कौटिल्य ने लिखा है कि विभिन्न सेवाओं के लिये नियुक्तियाँ करते समय प्रत्याशियों के नैतिक चरित्र की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। जो लोग धार्मिक पक्षपात से मुक्त हों उन्हें न्यायिक पदों पर नियुक्त किया जाय। (धर्मोपधाशुद्धा धर्मस्थायी कण्अकशोधनेषु स्थापयेत्) जो लोग आर्थिक प्रलोभनों से परे हों उन्हें प्रशासकीय तथा राजस्व संबंधी क्यों पर नियुक्त किया जाय। (अर्थोपधाशुद्वान सामाहर्त संनिधानृनिचयकर्मन्सु) जो व्यक्ति धार्मिक, आर्थिक तथा ऐन्द्रिक आदि सभी प्रकार के प्रलोभनों से परे हों और जो निर्भक हो उन्हें मंत्री पद पर नियुक्त किया जाय। सर्वोपशुदान्तकिया कर्यात्।

लोक प्रशासन में सत्यनिष्ठा की स्थापना करने के लिये यह भी आवश्यक है कि वेतन, पारिश्रमिक आदि में सुधार किया जाय। इस बात की उच्च स्वर में घोषणा करने की आवश्यकता नही हैं कि सेवाओं में नियुक्ति तथा पद्धति योग्यता और कार्य कुशलता की कसौटी के आधार पर की कार्य कुशलता की कसौटी के आधार की जानी चाहिये। लोकतंत्र तभी सुरक्षित रह सकता है जबकि सेवाएँ ईमानदार हो, बेईमानी है जबकि सेवाएँ ईमानदार हो, बेईमानी तनिक भी संदेह से परे हों और वे निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्यों को पालन करें।

यदि हम चाहते हैं कि सेवाओं में व्यापक अर्थ में सत्य निष्ठा पायी जाय

तो यह भी आवश्यक है कि सत्य निष्ठा पायी जाय तो यह भी आवश्यक है कि सेवाओं की संपूर्ण व्यवस्था, वस्तुगतता, कार्य कुशलता, निष्पक्षता और न्याय की भावना से ओत प्रोत हों। प्रान्तीयता और जाति के आधार पर अयोग्य तथा भ्रष्ट अधिकारियों को कायम रखा जाता है और यहाँ तक कि उनकी पदवृद्धि भी कर दी जाती है। यह प्रवृत्ति अधिकारियों के मनोबल के लिये बहुत हीं घातक हैं इससे अधिकारियों की सत्य की विजय में आस्था क्षीण होने लगाती है और वे निराशा के शिकार बन जाते हैं। इस लिये आवश्यक है कि भर्ती, प्रशिक्षण ओर पद वृद्धि के नियम न्याय ओर साम्य के उच्चतम आदर्शों पर आधारित हो। जब कभी सत्य निष्ठा के सिद्धान्त का घूस, भ्रष्टाचार अथवा अनैतिक आर्थिक लाभ के कारण उल्लंघन किया जाता है तो वह एक पृथक उदाहरण बन कर नही रह जाता है बल्कि उसका त्यापक दुष्प्रभाव पड़ता है और भ्रष्टाचार रूपी पिशाच हर क्षेत्र में अपना सिर उठाने लगता है। हमारा समाज बहुसमुदायी समाज है। भारतीय राज्य ने कल्याण को साक्षात्कृत करने का आदर्श अपनाया है। समाजवादी ढंग के समाज को लोकतांत्रिक तरीके से साक्षात्कृत करना है। किन्तु राज्य के कार्यों में वृद्धि होने से अधिकता और औपचारिकता का प्रादुर्भाव होता है। महत्व बढ़ता है और वैयक्तिकता का ह्रास होता है। इन चीजों को रोकने का एक मात्र उपाय यह है कि ऐच्छिक समदाय सामाजिक क्षेत्र में सचमुच सृजनात्मक कार्य करने का अधिकाधिक प्रयत्न करें सृजनात्मक कार्य करने का अधिकाधिक प्रयल करें। सृजनात्मक नागरिकता की भावना की वृद्धि करने तथा लोक जीवन में सत्य निष्ठा के परिवर्द्धन में भी ऐच्छिक समुदाय सामाजिक क्षेत्र में सचमुच सृजनात्मक कार्य करने का अधिकाधिक प्रयत्न करें सृजनात्मक नागरिकता की भावना की वृद्धि करने तथा लोक जीवन में सत्य निष्ठा के परिवर्द्धन में भी ऐच्छिक समुदाय महत्वपूर्ण योगद दे सकते हैं।

एशिया तथा अफ्रिका के अनेक देशों में लोकतंत्र पर जो भीषण आघात हुए हैं उन्होंने भारत के सामने एक चुनौती प्रस्तुत कर दी हैं ऐसे संकट के समय में संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित मूल्यों और मोलिक अधिकारों को अंगीकार करना अत्यंत आवश्यक है। भात में लोकतंत्र की असफलता के संबंध में जो बकबास की जाती है, उसकी ओर हमें ध्यान देना चाहिये क्योंकि गोष्ठियों और कॉ।फी घरों में और सड़कों पर जो विचारहीन वाकपटुता प्रदर्शित की जाती है उससे हमारा मनोबल क्षीण होता है और लोकतंत्र के आधारों को दृढ़ करने का हमारा संकलप दुर्बल होता है। ऐसे समय में यूही आवश्यक न ही है कि प्रशासनकीय ढांचा सुयोग्य तथा बुद्धि संशत हो और कुछ निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य को ध्यान मे रखकर कार्य करें बल्कि इस बात की भी जरूरत है कि वह सतयनिष्ठा और व्यापक ईमानदारी की भावना से ओत–प्रोत हो।

लोक सेवा के लिये गंभीर दृष्टिकोण नैतिक संवेदनाओं के परिष्कार तथा उद्देश्य के प्रति समर्पण की भावना की आवश्यकता हमें यह मानकर चलना चाहियें कि जीवन महान मूल्यों और महत्व की वस्तु हैं सेवा का जीवन

तुच्छ कार्यों के लिये नहीं होता। कभी–कभी यह कहा जा सकता है कि असैनिक सेवा में विज्ञापन और जय जयकार की उतनी चमक दमक न ही होती जितनी कि भाग्यशाली राजनीतिज्ञों को उपलब्ध है। किन्तु यमक दमक क्षणमंगुर होती है। राष्ट्र की सेवा के द्वारा अपने व्यक्तित्व के विकास में योगदान देना अत्यधिक महत्वपूर्ण पुस्तकार हैं लोक प्रशासन की सफलता के लिये ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना पड़ता जिनमें भ्रष्टाचार का प्रलोमन ही न उत्पन्न हो। लोक सेवा को समाज में समानपूर्ण स्थान देना पड़ेगा। इस देश में लोक सेवाओं का ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ दीर्घ काल तक संबंध रहा है, इस लिये लोक मानस में उनके प्रति कुछ अंशों में घृणा का भाव उत्पन्न हो गया हैं पुलिस के प्रति लोगों के मन में जो सामान्य घृणा देखने को मिलती है उससे उक्त कथन की पुष्टि होती है।

आज भष्टाचार एक महामारी है और वह भंयकर रूप से संक्रामक होती हैं एक भ्रष्ट अधिकारी को यह आशा नही करनी चाहिये कि दूषित जगत में उसकी संतान के साथ न्याय का बर्ताव किया जायेगा। अतः स्पष्ट है कि सत्य निष्ठा की समस्या जीवन के प्रति समर्पण की भावना के साथ संबंध हैं

## संदर्भ


1. वेन ए. आर. लेज. ethics and Administrative Dierition, Public Adminitration Powers over Presons and Property (शिकांगों विवि प्रेस 1928) अरस्तू Polities Book VI.
2. एम0पी0 फॉलटे, Dynamic Administration लूयर गूलिक तथा एल उर्विक Papers on the some of Administration (1937)
3. फिलिप मोनी पेनी A code of Ethics as a means of controlling Administration Conduct.
4. फ्रिरज एम मार्क्स 'Adminitration Ethics and the Rule of law.
5. नेहरू का सार्वजनिक भाषण मदुगई 5 अक्टूबर 1961।
6. पिफनर तथा आर वॉस प्रैस्थस Public Administration पृष्ठ 573–74।
7. एच0ए0 साइमन और डी0 डब्ल्यू आर डिवाइन Human Factors in an admonition Experiment.
8. चार्ल्स ई0 मैरियम Public & Private Government (येल यूनिवर्सिटी प्रेस 1945)
9. V.P. Verma Hindu Political Thought.
10. डेविड लेवीटन ''The Responsibility of Administrative officials in a Demarcation Society, Political Science Quarterly (कोचम्बियाँ यूनिवर्सिटी U.S.A.) दिसम्बर 1941
11. पॉल एपिलबी, Morality And Administration In democratic Government.
12. Maxmebur "Studies in Bureaucraing.